International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(3): 07-11

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(3): 07-11
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 07-03-2018
Accepted: 08-04-2018

**डॉ. वेद प्रकाश मिश्र**
प्रोफेसर, संस्कृत विभागाध्यक्ष
डॉ सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय,
करगीरोड, कोटा, बिलासपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

**श्रीमती प्रतिभा पाठक**
एम फिल. संस्कृत
शोध छात्रा, डॉ सी.वी.रामन्
विश्वविद्यालय, करगीरोड, कोटा,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

**Correspondence**
**डॉ. वेद प्रकाश मिश्र**
प्रोफेसर, संस्कृत विभागाध्यक्ष,
डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय,
करगी रोड़ कोटा, बिलासपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

# भवभूति के नाटकों में स्त्री पात्रों का वैशिष्ट्ये

**डॉ. वेद प्रकाश मिश्र, श्रीमती प्रतिभा पाठक**

## प्रस्तावना

महाकवि भवभूति संस्कृत साहित्य के कालजयी व कवियों एवं नाटककारों में अग्रगण्य हैं। इसमें कोई कतिपय या तनिक भी संशय नहीं है। राम व सीता के निर्वासन की समस्या राम कथा की एक प्रधान घटना रही है। साधारणतया देखने से सीता और राम दो अलग–अलग सत्ता दिखाई देते हैं, तथा मनुष्य राम तथा सीता की पृथकता को देखकर इस घटना का यथासम्भव खण्डन करने का प्रयास करते हैं। जबकि सत्य तो यह है कि राम सीता कभी पृथक हुए ही नहीं। दोनों में पृथक होने के बावजूद भावनात्मक एवं आत्मीय रूप से एक दूसरे से जुड़े हुए थे अतः इनको पृथक कहना उचित नहीं होगा तथा आपस में दोनों की सहयोग की भावना आज हमें यह शिक्षा देती है कि स्त्री और पुरूष इस समाज रूपी रथ के दो पहिये हैं, और जब दोनों का सहायोग एक दूसरे को मिलता है तो सृष्टि अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होती है। भवभूति ने दोनों के मन को समझकर जो छाया सीता अंक की कल्पना की वह साहित्य जगत के लिए अद्वितीय है। चरित्र चित्रण नाटक का महत्वपूर्ण तत्व होता है। सम्पूर्ण नाटकीय कथा घटनाएँ और परिस्थितियॉ तब तक चरित्र से संबंधित नहीं होती हैं, जब तक वे नाटकों को प्रभावशाली बनाने में वह सक्षम नहीं होती है क्योंकि चरित्र चित्रण की उत्कृष्टता से ही नाटक का संतुलन तय किया जाता है।

## स्त्री पात्रों का वैशिष्ट्य

भवभूति की लेखनी का सूक्ष्म अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि नारी विषयक भावनाओं और नारी की स्थिति का अध्ययन इस शोध पत्र में किया गया है। भवभूति के नाटकों में स्त्री पात्रों का वैशिष्ट्य पर शोध–पत्र प्रमुख स्त्री पात्रों पर है, जिस का वर्णन बिन्दुवार इस प्रकार है :–

### 1. सीता

सीता का वर्णन भवभूति ने अपने महावीर चरित एवं उत्तररामचरित् में किया है। मन ही मन सीता वनवास में बिताये अपने वियोग के दुःख से भयभीत है। भवभूति ने सीता के जिस चरित्र की अभिव्यक्ति की है। वह परिजात की सुगन्ध है। मानव मन को प्रफुल्ल तथा विस्मय कर देने की अद्भुत क्षमता रखती है। वे सम्पूर्ण विश्व का भरण–पोषण करते वाली देवी वसुन्धरा की पुत्री हैं। प्रजापति के समान राजा जनक उनके पिता हैं, जिनके वंष के भगवान सूर्य और विश्वामित्र गुरू हैं, ऐसे राजा की पुत्र वधु हैं तथा मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान राम की सहधर्मिणी हैं। वे आदिशक्ति की प्रतीक हैं। अतः उनका शील, सदाचार और महानुभाविता सब कुछ उसी तरह का है। उनका चरित्र बहुत ही उदार तथा मोहक है। नारी सुलभ कोमलता और संकोच की वे अधिष्ठात्री हैं। सीता की चारित्रिक विशेषतायें कुछ इस प्रकार हैं :–

**सरल हृदया :** सीता अति सरल हृदया हैं। तृतीय अंक में राम के द्वारा ''हाय प्यारी सीता'' शब्द कहते सुनकर उन्हें क्रोध तेा स्वभावतः आ ही जाता है परंतु निरपराधिनी पत्नी का ऐसा भाव अनुचित कहा भी नहीं जा सकता है क्योंकि अपराधरहित होने पर भी उनका परित्याग किया गया है, किन्तु राम के प्रति क्रोध का परित्याग कर उसके स्थान पर राम की पीड़ा उन्हें दुःखी कर जाती है। राम के प्रति अगाध प्रेम के कारण वह उनके दुःख को आत्मसाध कर लेती है एवं आर्यपुत्र इतना सब कुछ होने पर ऐसे शब्द कहने ठीक नहीं। शब्द उनके मुख से निकल जाते हैं। यही उनके मन की सरलता का प्रतीक है।

**सुंदरता :** सीता का सौंदर्य करोड़ों कामदेवों को भी लज्जित करने वाला है। राम सीता का प्रथम बार दर्शन करते ही उनकी ओर आकृष्ट हो जाते हैं। वे उनके रूप सौंदर्य को देखकर मुग्ध हो जाते हैं। राम कहते है कि सीता का ऐसा क्या मेरे लिए अतिप्रियकर नही है। अर्थात् उनका सब कुछ अतिप्रियकर है, किन्तु उनका वियोग मेरे लिए असहनीय है।
''किमस्य न प्रेयो यदि परम विरह।'' 1 उनका सौंदर्य अग्नि की तरह दाहक नहीं बल्कि चंदन के समान शीतल व कपूर के समान सुगन्धित है।

आतङ्कश्रमसाध्वसव्यतिकरोत्कम्पः कथं सहृाता
मङ्गैर्मुग्धमधूकपुष्परूचिभिर्लावण्यसारैरयम्।
उन्नद्धस्तनयुग्मकुङ्मगुरूष्वासावभुग्नस्य ते
मध्यस्य त्रिबलीतरङ्गकजुषो भङ्गः प्रिये मा च भूतू।। 2

जब रावण सीता के सौंदर्य की प्रशन्सा करते हुए कहता है कि यदि सीता का मुख है तो चन्द्रमा का क्या प्रयोजन यदि इसके चॅचल नेत्र हैं तो नील कमलों की क्या जरूरत है। इसी तरह चॅचल भौंहे हैं, तो कामदेव के धनुष की क्या आवश्यकता है वे व्यर्थ हैं यदि अच्छी तरह से बंधे हुए केशपाश हैं तो बादलों की पंक्तियॉ व्यर्थ हैं। और इनका शरीर है तो लक्ष्मी से क्या प्रयोजन है। अर्थात् सीता का सौंदर्य इस पृथ्वी की अनुपम निधि है।

**सीता का पतिव्रत :** सीता का उत्कृष्ट पति प्रेम अनुपम है। सीता ने अग्नि में प्रवेश करके अपने पतिव्रत को सिद्ध किया। जिसकी देवता लोग भी प्रशन्सा करते हैं । अलका कहती है कि पतिव्रत रूप तेज की शुद्धता अन्य तेज से की जा रही है, अर्थात् यहॉ लौकिक मर्यादा का पालन नहीं किया गया है।

पतिव्रतामयं ज्योतिर्ज्योतिषान्येन शोध्यते।
इदमाष्चर्यमधवा लोकस्थित्यनुवर्तनम।। 3

किन्नरी सीता का यशोगान करते हुए कहती है – 'हे सीते अब तक शेषनाग के सिर पर यह पृथ्वी टिकी हुई है, जब तक यह आकाश मण्डल नक्षत्रों की शुभ्रता से सुशोभित है तब तक सातों लोकों में तुम्हारा पवित्र एवं निर्दोष चरित्र पवित्र आचरण करने वाले लोगों के द्वारा गाया जाता रहेगा। अरून्धति सीता को पवित्र स्त्रियों में जगह देते हुए कहती है कि अब तक तीन ही पतिव्रता स्त्रियॉ थीं। अब तुम्हे लेकर चार हो गयी।

**करूणामयी** : विदेह नंदिनी सीता का मन अत्यंत ही करूणा से भरा हुआ है। सीता के मन में यह बात शूल की तरह चुभी हुई है कि निरपराधिनी होने पर भी राजा राम ने उनका परित्याग कर दिया उसके बाद भी अपने वियोग में राम की ऐसी अवस्था देख कर वे रो उठती हैं। वे अपने आपको धिक्कारे लगती हैं और तमसा से प्रार्थना करती हैं कि वो जाकर राम को धीरज बंधाये, उन्हें होश में लायें। तब तमसा उन्हें आदेश देती हैं कि वे स्वयं राम की चेतना को वापस लायें तो वे कहती हैं कि अब जो भी होना हो, हो जाये मैं वही करूॅगी जिससे राम की मूर्च्छा वापस आ जाये :–

आर्यपुत्रस्यैतेन दुर्वारदारूणारम्भेण दुःखसंयोगेन।
परिमुषितनिजदुःखं प्रमुक्तजीवित में हृदयं स्फुटति।। 4

जब भागीरथी सीता का परिचय करवाते हुए कहते हैं कि बेटी यह तुम्हारी माता पृथ्वी हैं तो सीता करूणा में भरकर कहती हैं हा माता ! आपने भी ऐसी अवस्था में मुझे देखा इस बात का खेद है।

**प्रेम** : सीता प्रेम की साक्षात् मूर्ति हैं। प्रेम उनके प्रत्येक अंग से छलकता है राम भले ही क्यों न प्रजानुरंजन के लिए उनका परित्याग कर दें। परंतु सीता तो हर तरह से राम की ही हैं। राम के सिवा उन्हें कुछ सूझता ही नहीं है। राम नहीं तो सीता का कोई अस्तित्व नहीं है। राम के इस बारह वर्षों के वियोग को याद करके वे कह उठती हैं। हाय रे भाग्य ! वह मेरे बिना और मैं उनके बिना रहूॅगी ऐसा किसी ने सोचा भी था :–

हा दैव ! एष मया विना अहमप्येतेन
विनेति केन सम्भावितमासीत।। 5

उनका सर्वस्व राम के लिए समर्पित है। प्रथम दर्शन में ही वे राम के प्रति आकर्षित हो जाती हैं । राम का दर्शन, उनका स्पर्श उनकी बातें सीता के जीवनरक्षक औषधि के समान है।

**निर्लोभता :** विदेह वंश वैजयन्ती सीता को भला किसी भौतिक वस्तु में क्या आसक्ति हो सकती है। जिसने संसार के मूल रहस्यों को जान लिया है, उसे राजप्रसाद के भौतिक भोगों को त्याग देने में, जिसे एक क्षण का भी विलम्ब नहीं हुआ, उसकी निर्लोभिता का आंकलन क्या हो सकता है। जिसके लिए राम के साथ वन गमन से बढ़कर कोई सांसारिक सुख नहीं है, जिसका सर्वस्व राम हैं, उसके लिए किसी भौतिक वस्तु की क्या लालसा हो सकती है। पति के द्वारा सुवर्णमयी सीता की बात सुनकर वे आत्मसंतुष्ट हो जाती हैं। कहती हैं कि चलो उसी के द्वारा मन बहलता होगा। वे तब भी किसी राज्य की लालसा अपने मन में आने नहीं देती हैं।

**2. मालती**

मालतीमाधवम् प्रकरण की प्रमुख नायिका मालती है। नाट्क का सम्पूर्ण इतिवृत उसी को लेकर है उसमें स्त्रियोचित सम्पूर्ण सद्गुणों का विकास हुआ है। भरत मुनि ने नायिका के चार भेद दिव्या, नृपपत्नी, कुलस्त्री और गणिका किया है। जिसमें दिव्य–विक्रमोर्वशीय की उर्वषी है, नृपपत्नी–वासवदत्ता है, कुलस्त्री–मालतीमाधवम् की मालती है और गणिका–मृच्छकटिक की वसन्तसेना। विश्वनाथ ने भी साहित्य दर्पण में नायिका के तीन भेद बताये हैं :–

अथ नायिका त्रिभेदा स्वान्या साधारणी स्त्रीति।
नायक सामान्य गुणैर्भवति यथासंभवैर्युक्ता।। 6

दशरूपककार धनंजय ने भी तीन प्रकार की नायिकाओं का वर्णन किया है ''स्वान्या साधारण स्त्रीति तद् गुण नायिका त्रिधा।'' 7 नाट्यशास्त्रीय नायिका भेद की दृष्टि से मालती स्वकीया नायिका है। स्वकीया नायिका के तीन भेदों में से विवाह के बाद मुग्धा नायिका का रूप उसमें देखा जाता है।

**अनुपम सौंदर्य :** मालती अनुपम सौंदर्य की स्वामिनी है। ऐसा लगता है कि चंद्रकला, मृणाल और ज्योत्सना आदि उसके निर्माण के कारण तथा निर्माता कामदेव हैं। मालती के अंगों और नेत्रों आदि का वर्णन करते हुए माधव स्वयं कहते है :–

ज्वलयति मनोभवाग्निं मदयति हृदयं कृतार्थयति चक्षुः।
परिमृदितचम्पकाव्लिविलासलुलितालसैरङ्गैः।। 8

इस प्रकार जब इसका भोला–भाला मुख कमल की शोभा धारण करता है तो इसकी छवि को देख कर निपुण सखियों को इसके कौमार्य पर सन्देह हो उठता है क्या ये हमारे सामने प्रत्यक्ष है या हम कोई स्वप्न देख रहे हैं। वे ऐसा मनोभाव प्रकट करती है।

**आगाध प्रेम :** मालती के मन मे अपने प्रियतम माधव के लिए अगाध प्रेम है। प्रथम दर्शन में ही मालती के हृदय मे माधव के प्रति

अनुराग उत्पन्न हो गया। वह मन ही मन माधव से प्रेम के विरह में जलती है और कहती है :–

मनोरोगस्तीव्रो विषमिव विसर्पत्यविरतं।
प्रमाथी निर्धूमो ज्वलति विधुतः पावक इव।
हिनस्ति प्रत्यंङ्गं ज्वर इव गरीयानित इतो
न मां त्रातुं तातः प्रभवति न चाम्बा न भवति।। 9

उसके प्रेम की पराकाष्ठा उस समय देखने को मिलती है जब कपाल कुण्डला उसे कराला देवी के मन्दिर में बलि देने को ले जाती है, और उससे अपने प्रियतम को स्मरण कर लेने को कहती है क्योंकि मालती का अन्तिम समय समीप है तब मालती के मुख से निकलता है

''हा देव माधव, परलोकगतोऽपि युष्माभिः स्मर्तव्योंऽयं जनः।
न खलु से उपरतो यस्य बल्लभः स्मरति।।'' 10

फिर भी माधव के बिना उसे अपना जीवन व्यर्थ प्रतीत होता है और वह अपना जीवन त्यागने को तत्पर है। किन्तु उसके पहले एक बार माधव को देखना चाहती है। वह माधव को ही अपना सर्वस्व मानती है, जिसमें अन्य किसी से प्रेम तथा विवाह की बात सोच भी नहीं सकती है। इससे मालती का माधव के प्रति आगाध प्रेम प्रदर्शित होता है।

**मर्यादा के प्रति सजगता :** माधव को आगाध प्रेम करते एवं अनन्य सुन्दरी होते हुए भी अपने कुलीन संस्कारों की रक्षा और माता–पिता की मर्यादा–रक्षा के प्रति कृतसंकल्पित है। अपने दुःख–सुख की तुलना में अपने पिता की मर्यादा रक्षा को सर्वोपरि मानती है तभी तो वह कहती है :–

ज्वलतु गगने रात्रौ रात्रावखण्डकलः शशी
पहतु मदनः किं वा मृत्योः परेण विधास्यतः।
मम तु दयितः श्लाध्यस्तातो जनन्यमलान्वया
कुलममलिनं न त्वेवायं जनो न च जीवितम्।। 11

जब उसे पता चलता है कि उसके पिता ने उसका विवाह नन्दन से तय कर दिया है तो वह बहुत दुखी होती है। परंतु अपने पिता का विरोध नहीं करती है और कहती है ''हा हतास्मि समुपस्थितानर्धवज्रपतना मन्दभागिनी।'' 12 नन्दन से विवाह तय होने के पश्चात् माधव के तरफ देखना भी उसे मर्यादा के खिलाफ लगता है जबकि कामान्दकी उसे प्राचीन काल की स्त्रियों शकुन्तला, वासवदत्ता, और उर्वशी आदि का उदाहरण देकर बताती है कि पिता की आज्ञा के बिना भी इन स्त्रियों ने अपने अनुरूप वर का चयन कर गन्धर्व विवाह किया थां किन्तु मालती उसके विषय में सुनती भर है। अपने पिता के इच्छा के विरूद्ध माधव से विवाह करने की तुलना में उसे दुःख सहना ज्यादा श्रेष्ठकर प्रतीत होता है। उसका मौन उज्जवल चरित्र का दर्पण है।

**पतिव्रत :** मालती जहां एक ओर अपने पिता का विरोध नहीं करती उनकी मर्यादा की रक्षा के प्रति दृढ़ संकल्पित हैं, वहीं वह माधव को ही अपना सर्वस्व मान चुकी है। वह पति रूप में एक मात्र माधव को ही चाहती है, नहीं तो अपने जीवन का अंत कर देना चाहती है। प्रथम दर्शन में ही वह माधव को अपना पति मान लेती है। वह प्रथम दर्शन का चित्र बनाती है, जो मन्दारिका और कलहंस के माध्यम से माधव तक पहुंचता है, तब मालती हर्ष और दीर्घ निःश्वास के साथ कहती है कि मेरे हृदय को अभी भी धैर्य नहीं है क्योकि यह आश्वासन भी प्रवंचना हो सकते हैं। नन्दन से विवाह की बात सुनकर वह शोकाकुल हो उठती है। उसे लगता है कि अब उसके जीवन में कुछ भी शेष नहीं है। उसके मन से जीवन की लालसा समाप्त हो जाती है। वह अपने आप को मन्दभागिनी कहती है वह माधव की ओर देखकर कहती है।
''महानुभाव लोचनानान्दक, एतावद् दृष्टोऽसि।''13 श्मशान में अघोरघण्ट से अपने आपको बचाए जाने पर मालती उसे पति रूप में मानकर कहती है कि हे नाथ यह निर्दयी बड़ा ही भयंकर है। आप इस अनर्थकारी संकट से हट जाइये। यद्यपि प्रेम तथा पिता के प्रति श्रद्धा और कर्तव्य में सर्वत्र संघर्ष है फिर भी मालती माधव को ही अगले जन्म में पति के रूप में पाने की कामना करती है और नाट्क का इतिवृत्त कुछ इस तरह उन्मुख होता है कि अन्ततः इसी जन्म में उसका विवाह माधव से हो जाता है। यह मालती का माधव के प्रति ऐकान्तिक प्रेम की ही परिणिती है।

**लज्जा :** मालती में नायिका के अनुरूप लज्जा भी है। लवंङ्गिका द्वारा बकुल माला के बारे में बात करते समय वह लज्जा पूर्वक कहती है ''हुं ततस्ततः।'' पुष्प चयन करते समय जब कामन्दिकी उसका आलिङ्गन करती है और कहती है पुष्प चयन के परिश्रम ने तुम्हारी वाणी में स्खलन पैदा कर दिया है, सभी अंङ्ग प्रत्यङ्गों को थका दिया है, मुख चंद्र को सुन्दर बनाने वाली पसीने की बूंदे पैदा कर दी है एवं दोनों नेत्रों को मुकुलित बना दिया अतएव अब प्रिय के दर्शन योग्य तुम्हारा सारा अंङ्ग बन गया है। उसकी बातें सुनकर मालती लज्जा का अनुभव करती हैं। कराला देवी के मंदिर में विवाह से पूर्व पूजन के लिए जाती हैं और लवंङ्गिका के भ्रम में माधव का गाढालिङ्गन करती हैं तथा मौलसिरी की माला उसके गले में पहनाती हैं। जब वह देखती है, कि लवंङ्गिका नहीं माधव है तो वह लज्जा से संकुचित हो दूर हट जाती है। इससे उसके प्रति सलज्ज होने की बात प्रमाणित होती है।

**मृदुभाषिता :** मालती का स्वाभाव नम्र है वह किसी से भी कटुतापूर्ण वाणी नहीं बोलती है। नन्दन से विवाह तय होने के पश्चात् भी वह अपने पिता पर क्रोध नहीं करती है। सिर्फ इतना ही कहती है कि पिता जी के लिए राजा की आज्ञा सर्वोपरि है, किन्तु उनकी पुत्री होने के नाते उनकी आज्ञा मेरे लिए सर्वोपरि है। नन्दन से विवाह के पूर्व जब लवंङ्गिका उसे विवाह के लिए फूलों की मालाएँ और अङ्गराग देती है तो वह कहती है कि जिसका मनोरथ दुर्लभ वस्तु का प्रार्थी हो, और उसका भाग्य विपरीत हो तो वह और क्या बोलेगा। वह लवंङ्गिका से कहती है कि सखी तुम्हें मालती का जीवन प्यारा है किन्तु मालती नही। वह लवंङ्गिका से विनय करते हुए कहती है कि ''सखी अलङ्घनीयस्ते मालतीप्रणामः।'' 14

**आज्ञाकारिता :** मालती अपने पिता की आज्ञाकारी पुत्री है। वह बड़ो की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकती । तभी तो कामन्दकी के आने पर उठकर खड़ी हो जाती है और कहती है– भगवती वन्दे। जब कामन्दकी उससे माधव से विवाह करने की बात करती है तो वह कहती है– आज्ञापयतु भगवति। पिता ने उसकी इच्छा के विरूद्ध नन्दन से उसका विवाह तय कर दिया तो भी वह उनका विरोध नहीं करती है ये मालती का अपने पिता के प्रति आज्ञाकारिता का स्पष्ट प्रमाण है।

### 3. वासन्ती

वासन्ती वनदेवता है। वनवास काल में वह राम और सीता की प्रिय सखी रहती है। अत्रियी द्वारा यह समाचार सुनकर कि राम ने गर्भवती सीता का परित्याग कर दिया है। वह दुःख से विव्हल हो जाती है। किन्तु यह सुन कर कि राम ने अश्वमेध यज्ञ के लिए दूसरा विवाह न करके सीता की हिरण्यमयी प्रतिकृति बनवायी है। उसके मन को कुछ संतोष मिलता है। राम के प्रति उसके मन में जो रोष की भावना जन्म लेती है, उसमे कुछ कमी आती है। वह सीता परित्याग की बात से बहुत दुखी है। राम के पंचवटी आने पर उन्हे सीता विषयक कठोर उपालम्भ देती है। वह कहती है कि आप तो सीता को अपना जीवन, अपना प्राण सब कुछ मानते थे फिर

यह परित्याग कैसा? वह राम को राजा राम कह कर उनकी भर्त्सना करती है। यद्यपि वासन्ती सिर्फ तृतीय अंक में ही दिखाई देती है और नाट्क में उसकी उपस्थिति कुछ देर के लिए रहती है फिर भी राम सीता के मन का कलुष धोने में वह महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यदि नाटक में वासन्ती की उपस्थिति और उसके कठोर उपालम्भ नही होते हैं तो राम अपने मन की पीड़ा को कभी व्यक्त नहीं कर पाते।

**4. कामन्दकी**

महाकवि भवभूति के नाटक मालतीमाधवम् की सबसे सशक्त और महत्वपूर्ण स्त्री पात्र कामन्दकी है। वो एक बौद्ध सन्यासिनी या भिक्षुणी किन्तु लोक व्यवहार में उसका बुद्धि–विलास किसी भी कूटनीतिज्ञ राजपुरूष से कम नहीं है उसकी योजना, नीति और क्रियाषीलता के समक्ष बड़ी–बड़ी बाधायें भी घुटने टेक देती हैं। गम्भीर से गम्भीर समस्यायें भी आसानी से सुलझ जाती हैं। भवभूति का यह पूरा प्रकरण ही उसके कुशल सूत्र–संचालन का प्रतिफल है।

कामन्दकी लोक जीवन के सुखों से विरत हो चुकी है, और बौद्ध सन्यासिनी के रूप में समाज में उसका एक अलग ही स्थान है। किन्तु इन विपरीतताओं के बावजूद विवाह जैसे सांसारिक कार्य में इतना रस लेना और उसे सफल बना देना कामन्दकी की बहुत बड़ी विशेषता है। अवलोकिता के ऐसा कहने पर कि भूरिवसु ने आपको इस झंझटी कार्य में क्यों नियुक्त किया है वह कहती है,

> ''यन्मां विधेयविषये स भवन्नियुङ्क्ते स्नेहस्य तत्फलमसौ प्रणयस्य सारः।
> प्राणैस्तपोभिरथवाभिमतं मदीयैः कृत्यं घटेत सुहृदो यदि तत्कृतं स्यात्।।''15

वह अवलोकिता को बताती है कि जिस समय विद्या अध्ययन के लिए हम लोगों का साहचर्य था, सौदामिनी के सामने भूरिवसु और देवरात ने यह प्रतिज्ञा की थी कि –हम दोनों की सन्तानों का परस्पर विवाह सम्बन्ध अवश्य होगा। अपने इन दोनों मित्रों की प्रतिज्ञा को सत्य करने के लिए और उनकी सन्तानों को आपस में विवाहित देखने के लिए वह उचित–अनुचित कोई भी उपाय करने से पीछे नहीं हटती। इससे पता चलता है कि वह एक अच्छी मित्र भी हैं और मित्र का कार्य उसे प्राणों से भी प्यारा है।

**5. कौशल्या**

कौशल्या राजा दशरथ की पत्नी और राम की माता है। राम उन्हें प्राणों से भी प्रिय है। वे सीता को अपनी बहू नहीं पुत्री की तरह मानती हैं, तभी तो जब उन्हें पता चलता है कि राम निरपराध और गर्भवती सीता का परित्याग कर दिया है वे अयोध्या न जाने का प्रण कर लेती है। वाल्मीकि के आश्रम में वे राजा जनक के समक्ष नहीं जाना चाहती। वे कहती हैं कि मैं अपने बहू के पिता और राजा दशरथ के मित्र राजा जनक का सामना कैसे करूँगी? वे गुरू वशिष्ठ की आज्ञा का उल्लंघन भी नहीं कर सकती, अतः इन विपरीत परिस्थितियों में भी राजा जनक का सामना करती है।

**6. कैकेयी**

कैकेयी केकय राजवंश में उत्पन्न, राजा दशरथ की पत्नी और भरत की माता है। पूर्व समय में राजा दशरथ ने कैकेयी को दो वरदान देने की बात कही थी। जिसके फलस्वरूप मन्थरा के शरीर में प्रविष्ट शूर्पणखा एक से भरत को राजगद्दी और दूसरे से राम, सीता और लक्ष्मण को चौदह वर्ष का वनवास मॉगती हैं। कवि ने ये सारे कार्य शूर्पणखा से सम्पन्न करवाकर कैकेयी के चरित्र को हर तरह से बचा लिया है। फिर भी लोगों की दृष्टि में कैकेयी ही दोषी रहती है, जिसका परिहार अन्त में अरून्धति करती है। नाटक में कैकेयी की प्रत्यक्ष उपस्थिति तो नहीं है किन्तु कवि ने कैकेयी के चरित्र की रक्षा कर अपने स्त्री के प्रति दृष्टिकोण को स्पष्ट किया है।

**7 उर्मिला**

उर्मिला विदेह राज जनक की पुत्री और सीता की बहन है। नाट्क में उनकी उपस्थिति कुछ ही क्षणों की है। वे सीता के साथ विश्वामित्र के आश्रम में आती हैं। वहॉ लक्ष्मण को देख कर उन पर आसक्त हो जाती हैं। राम और लक्ष्मण के आष्चर्यजनक कृत्यों को देख कर आष्चर्यचकित होती हैं। वहीं राम–सीता के साथ–साथ उनका भी विवाह लक्ष्मण के साथ हो जाता है। वे यह जानकर अत्यंत प्रसन्न होती हैं कि चारों बहनों का विवाह एक घर में राम आदि चारों भाईयों से होगा और उन्हे एक–दूसरे से अलग नहीं होना पड़ेगा।

**8. मद्यन्तिका**

मद्यन्तिका प्रासंड्गिक कथा की नायिका, मालती की प्रिय सखी और राजा के नर्म सचिव नन्दन की बहन है। वह मालती की तरह अपने को परिस्थितियों का दास नहीं बनाती बल्कि अपने प्राप्तव्य को पाने के लिए स्वयं प्रयास करती है। मद्यन्तिका अनुपम सौंदर्य की मलिका है। अपने नाम के अनुरूप रूप और लावण्य से समन्वित यौवन उसमें कूट–कूट के भरा है। मकरन्द उसकी सुन्दरता का वर्णन करते हुए कहता है कि :–

> तन्मे मनः क्षिपति यत्सरसप्रहारमालोक्य मामगणितस्खलदुत्तरीया।
> त्रस्तैकहायनकुरङ्गविलोलदृष्टिरष्लिष्टवत्यमृतसंवलितैरिवाङ्गैः।। 16

मद्यन्तिका के साहस यर्थाथवादिता, तत्परता आदि गुण विद्यमान है। वह ध्येय को प्राप्त करने में ऐसे साहस से क्षण भर में नहीं हिचकती है, जबकि ऐसी परिस्थिति में मालती अपनी शालीनता एवं कुलीनता के मर्यादा के कारण सामाजिक और पारिवारिक बन्धनों को तोड़ने में असमर्थ रहती है।

**9. सौदामिनी**

सौदामिनी कामन्दकी की पूर्व शिष्या है। वह श्री पर्वत पर तान्त्रिक साधना द्वारा मन्त्रसिद्धि के अद्भुत प्रभाव प्राप्त कर चुकी है। श्री पर्वत तान्त्रिक सिद्धि प्राप्त करने के लिए प्रख्यात है। वह श्री पर्वत पर ही साधानारत है कपालकुण्डला अपने गुरू की हत्या का प्रतिशोध लेने के लिए मालती का अपहरण कर श्री पर्वत पर ले जाकर उसकी हत्या का प्रयास करती है, किन्तु सौदामिनी अपनी दयाद्रता और परोपकारिता क कारण उसे बचा लेती है। वह मालती को आकाश मार्ग से तत्काल पद्मावती ले जाती है और कहती है :–

> पद्मावती विमलवारिविशाल सिन्धु–
> पारासरित्परिकरच्छलतो बिभर्ति।
> उत्तुङ्गसौधसुरमन्दिरगोपुराट्ट–
> सङ्घट्टपाटितविमुक्तमिवान्तरिक्षम्।। 17

इधर मालती के न मिलने से माधव अचेत पड़ा है। मकरन्द आत्महत्या करने को तैयार है, तब सौदामिनी उसको रोकते हुए कहती है ''वत्स कृतं साहसेन''। वह आत्महत्या करने को तैयार कामन्दकी, मदयन्तिका और लवड्गिका के समक्ष मालती को सकुशल उपस्थित कर सबके प्राणों की रक्षा करती है।

**10. अरून्धती**

अरून्धती महर्षि वशिष्ठ की धर्म पत्नी हैं और वे सतियों में अग्रिणी हैं। वे भवभूति के दोनों नाटकों महावीरचरित् और उत्तररामचरितम्

में उपस्थित हैं। उन्होंने सीता को कभी न नष्ट होने वाला उत्तरीय दिया था। अन्त में सबके समान वही कैकेयी को निर्दोष और सारे कृत्यों को करने वाली शूपर्णखा है यह बताती हैं। वही सीता को पतिव्रताओं में स्थान देती हैं तथा कहती हैं कि अब तक संसार में तीन ही पतिव्रताएँ प्रतिबद्ध थीं अब तुम्हारे साथ चार पतिव्रताएँ हो गयीं। वे जनक और कौशल्या को धैर्य बंधाती है तथा कहती हैं कि देव गुरू वशिष्ठ का कहना है कि इन घटनाओं का परिणाम सुखद होगा। अंत में वे सीता की पतिव्रता की घोषणा करती है।

### 11. कपाल–कुण्डला

कपाल कुण्डला अघोर घण्ट की शिष्या है। वह आकाश गमन में सिद्ध है। वह स्वाभाव से क्रूर है। कराला के मन्दिर में मालती के वध के समय उससे कहती है, ''तं भद्रे! स्मर दायितोऽत्र यस्तवाभू–दद्य त्वां त्वरयति दारूणः कृतान्तः।।'' 18 उसकी अपने गुरू के प्रति अत्यंत आसक्ति है। अपने गुरू की हत्या का प्रतिषोध माधव से लेने के लिए वह जलती रहती है।

> शांतिः कुतस्तस्य भुजङ्गषत्रोर्यस्मिन्निबद्धानुशया सदैव।
> जागर्ति दंषाय निशातदंष्ट्राकोटिर्विषोद्गारगुरूर्भजङ्गी।। 19

माधव से मालती का विवाह हो जाने के पश्चात् भी वह मालती का अपहरण कर श्री पर्वत पर ले जाती है, जहां मालती की बलि देना चाहती है। वह माधव के कार्य मे बहुत बड़ी बाधा उत्पन्न करते हुए सभी को पीड़ा पहुँचाती है। जब वह मालती को उठाने आती है और मालती माधव को पुकारती है। इस प्रकार कपाल कुण्डला एक क्रूर, दुष्ट और घृणित कार्य करने वाली स्त्री के रूप में चित्रित है।

### 12 मन्दोदरी

मन्दोदरी राक्षसराज रावण की पटरानी हैं। नाटक में उनकी उपस्थिति क्षणिक ही है। हनुमान द्वारा लंका दहन की बात से वह अत्यंत दुःखी है। इसलिए वह रावण को समझाने की चेष्टा करती है। वह अत्यंत दूरदर्शी है। सीता हरा के सम्बन्ध में वह रावण को किसी तरह का कोई उलाहना नहीं देती है, न ही उस सम्बन्ध में कोई बात ही करती है। वह सीता पर रावण की आसक्ति से परिचित है। व रावण को युद्ध की समस्त स्थितियों से अवगत कराती है। समुद्र पर राम के असाधारण विजय और सेतु निर्माण की बात भी बताती है। वह रावण से शत्रु द्वारा किये गये आक्रमण के प्रतिकार की बात करती है। रावण मन्दोदरी का बहुत सम्मान करता है अतः वह उसे अपने बगल में बैठाता है। चूँकि वह सीता के विषय में सोच रहा था तो मन्दोदरी के आने से उसमें विघ्न उपस्थित हुआ तब भी वह उस पर क्रोधित नही होता है बल्कि उसकी बातों को सुनता है।

### 13. बुद्धरक्षिता

कामन्दकी ने बुद्धरक्षिता को मदयन्तिका के हृदय में प्रेमभाव उत्पन्न करने के लिए नियुक्त किया है वह कामन्दकी की सखी है। वह अपने दायित्व का भली–भांति निर्वाह करती है। व्याघ्र के आक्रमण से मकरन्द द्वारा मदयन्तिका को बचाने पर वह मदयन्तिका से उसका परिचय कराती हैं, जब मालती के रूप मे मकरन्द उसके घर में आया होता है तो अनेक ललित बातें करके मदयन्तिका के मन के भावों को उभारती हैं, बुद्धिरक्षिता मदयन्तिका से कहती हैं ''अथ स मन्मथबलात्कारितो यदि कंदर्पजननीं त्वां रूक्मिणीमिव पुरूषोत्तमः स्वयंग्राहसाहसेन सहधर्मचारिणीं करोति तदा कीदृशी प्रतिपत्तिः।'' 20 अन्ततः वह मकरन्द के साथ चले जाने का निर्देश भी देती हैं। योजना अनुसार कामन्दकी के विहार में चले जाने को कहती है। बुद्धिरक्षिता एक बुद्धिमान, अनुभवी और आज्ञाकारिणी स्त्री प्रतीत होती है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि भवभूति मानव मन के कुशल चितेरे है। उन्होंने अपने नाटकों में अपने नारी चरित्रों को जिस कुशलता से उकेरा है वह अद्भुत है। उन्होंने नारी मन के आन्तरिक भावों को शब्द दिया है। बाह्य सौंदर्य को चित्रित किया है। उनकी स्त्री पात्रायें अपने सभी रूपों में सफल है। वे कन्या होकर कुल के लाज की रक्षिका है। उनके कहीं भी कुल कन्या के विरूद्ध आचरण नहीं दिखाई देता। वे पत्नी के गरिमामय पद को धारण करती है। अपने त्याग और तपस्या से पति और पितृ दोनों कुलों का उद्धार करती है। वे सन्यासिनी होकर भी सांसारिक हितों का ध्यान रखती है। मित्रों के लिए अपनी तपस्या तक को दॉव पर लगा देती है। उनकी नारी का चरित्र किसी पर निर्भर नहीं है अपितु अग्नि भी उसकी पवित्रता से प्रकाशित होती है।

### संदर्भ


1. त्रिपाठी, डॉ बाबूराम (सन् 2018) उत्तररामचरित्रम्, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा 1/38 पृ.सं–94
2. मिश्रः आचार्य श्री रामचंद्र (2005) महावीरचरित्रम्, चौखम्भा सूरभारती प्रकाशन, वाराणसी 2/21 पृ.सं–78, 79
3. मिश्रः आचार्य श्री रामचंद्र (2005) महावीरचरित्रम् ,चौखम्भा सूरभारती प्रकाशन, वाराणसी 7/4 पृ.सं–301
4. त्रिपाठी, डॉ बाबूराम (सन् 2018) उत्तररामचरित्रम्, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा अंक 3 पृ.सं–258
5. त्रिपाठी, डॉ बाबूराम (सन् 2018) उत्तररामचरित्रम्, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा अंक 3 पृ.सं–234
6. सिंह सत्यव्रत (2015) साहित्य दर्पण, चौखम्भा सूरभारती प्रकाशन, वाराणसी 3/56 पृ.सं–155
7. व्यास डॉ भोलाशंकर (2015) दषरूपक, चौखम्भा सूरभारती प्रकाशन, वाराणसी 2/15 पृ.सं–98
8. राय, डॉ गंगा सागर (2017) मालतीमाधव, चौखम्भा सूरभारती प्रकाशन, वाराणसी 3/6 पृ.सं–112
9. राय, डॉ गंगा सागर (2017) मालतीमाधव, चौखम्भा सूरभारती प्रकाशन, वाराणसी 2/1 पृ.सं–78, 79
10. राय, डॉ गंगा सागर (2017) मालतीमाधव, चौखम्भा सूरभारती प्रकाशन, वाराणसी अंक 5 पृ.सं–198
11. राय, डॉ गंगा सागर (2017) मालतीमाधव, चौखम्भा सूरभारती प्रकाशन, वाराणसी 2/2 पृ.सं–82, 83
12. राय, डॉ गंगा सागर (2017) मालतीमाधव, चौखम्भा सूरभारती प्रकाशन, वाराणसी अंक 2 पृ.सं–91
13. राय, डॉ गंगा सागर (2017) मालतीमाधव, चौखम्भा सूरभारती प्रकाशन, वाराणसी अंक 4 पृ.सं–160
14. राय, डॉ गंगा सागर (2017) मालतीमाधव, चौखम्भा सूरभारती प्रकाशन, वाराणसी अंक 6 पृ.सं–235
15. राय, डॉ गंगा सागर (2017) मालतीमाधव चौखम्भा सूरभारती प्रकाशन, वाराणसी 1/12 पृ.सं–18
16. राय, डॉ गंगा सागर (2017) मालतीमाधव चौखम्भा सूरभारती प्रकाशन, वाराणसी 4/8 पृ.सं–162
17. राय, डॉ गंगा सागर (2017) मालतीमाधव चौखम्भा सूरभारती प्रकाशन, वाराणसी 9/1 पृ.सं–325
18. राय, डॉ गंगा सागर (2017) मालतीमाधव चौखम्भा सूरभारती प्रकाशन, वाराणसी अंक 5 पृ.सं–198
19. राय, डॉ गंगा सागर (2017) मालतीमाधव चौखम्भा सूरभारती प्रकाशन, वाराणसी 6/1 पृ.सं–212
20. राय, डॉ गंगा सागर (2017) मालतीमाधव चौखम्भा सूरभारती प्रकाशन, वाराणसी अंक 7 पृ.सं–283